11. पोपट भाई

कुछ दशक पहले मैं बैंक के स्टाफ कॉलेज में काम कर रहा था। वेतन आराम से रहने के लिए ठीकठाक था। हम धारा 88 सी (अब 88) के तहत आयकर को कम करने के लिए पीपीएफ और एनएससी में निवेश करते थे । हमारा कार्यालय 5 वीं मंजिल पर था और तहखाने में प्रशासनिक कार्यालय था। प्रिंसिपल का कार्यालय पहली मंजिल पर था।

मार्च के अंत (शायद 28 मार्च) मैं एक दिन मुझे काम से तहखाने में जाना पड़ा। प्रशासनिक अधिकारी, श्री वैभव, (जिन्होंने हमें एक बहुत ही तेज इंसान के रूप में प्रभावित नहीं किया था और हम हंसी हंसी में उन्हें पोपट कहते थे) मुझे देखा और पूछा कि मेरी बचत इतनी कम क्यों है और मैं इतना अधिक आयकर क्यों चुका रहा हूँ (लगभग 40%)? हमारे बीच निम्नलिखित दिलचस्प बातचीत हुई"-

मैं :मैं अधिक बचत कैसे कर सकता हूं? बहुत मुश्किल से तो मैं 3,000/- रुपये (मेरा एक महीने का वेतन) को बचा पाता हूँ।

पोपट :डॉ साहेब यह बहुत कम है। आपको अधिक नहीं तो कम से कम 10,000/- रुपये बचाने चाहिए।

मैं : मैं यह कैसे कर सकता हूँ? मैं अपने खर्चों को और अधिक कटौती नहीं कर सकता।

पोपट :नहीं, नहीं, नहीं, आपको खर्च में कटौती करने की ज़रूरत नहीं है।

मैं :(आश्चर्य) तो मैं कैसे बचा सकता हूँ?

पोपट : क्या आप जानते हैं कि हमारे बैंक एनएससी (NSC) पर ऋण देता है?

मैं : हाँ, लेकिन मुझे इससे क्या लेना देना? मुझे इससे लाभ क्या है?

पोपट :आप जानते हैं कि आप अपने एनएससी के 90% तक 12% ब्याज पर कर्मचारी ऋण प्राप्त कर सकते हैं?

मैं :लेकिन मुझे एनएससी पर केवल 12% मिलता है, लाभ क्या है।

पोपट :यदि आप अपने 3,000/- रुपये के एनएससी पर 90% ऋण प्राप्त कर सकते हैं, जो हुआ रु 2,700/--। इस पर आपको 40% की आयकर छूट मिलती है, जो हुआ 1,080/- रुपये। आपका क्या कहना है? हम लाभ 50-50 शेयर करेंगे।

मैं :लेकिन ऋण लेने में परेशानी बहुत है।

पोपट :क्यों? मैं आपको फॉर्म देता हूँ, आप इसे भर दे। प्रधानाचार्य पहली मंजिल पर है। वह आज ही हस्ताक्षर कर सकतेहैं ।

मैं :लेकिन मुझे एनएससीसी खरीदने के लिए पोस्ट ऑफिस जाना होगा। कक्षाओं कक्षाओं में व्यस्तता के कारण मुझे ऐसा करने का समय नहीं है

पोपट :कोई बात नहीं, मेरी पत्नी एनएससी एजेंट है। वह कल आपको एनएससी दे सकती है।

मैं :ठीक है।

उसने मुझे ऋण प्रपत्र (loan form) दिया। मैंने उस पर हस्ताक्षरित किये और कक्षा में चला गया। वैभव ने अन्य विवरणों को पूरा किया, प्रधानाचार्य हस्ताक्षर कराये और अगले दिन शाम को उन्होंने मुझे 2,700 /- रुपये का एनएससी देकर कुछ उम्मीदों के साथ मुझे देखा। मैंने उसे 500/- रुपये और धन्यवाद दिया।

DO NOT COPY

पोपट :"डॉ साहेब, क्या एक ही बार खेलिएगा?"
मैं :क्या मतलब?
पोपट :आज केवल 29 मार्च है। साल के अंत होने में दो दिन अभी भी बचे हैं।

मैं अपने हँसी नहीं रोक सका और उसे फिर से धन्यवाद दिया। मन ही मन मुस्कराते हुए मुझे एहसास हुआ कि "पोपटभाई एक मूर्ख नहीं था, जैसा हमने उनके बारे में सोचा था"।

कुछ सवाल भी दिमाग में कौंधे। अगर पूरे साल इस खेल को खेलता तो कितनी बचत होती?? क्या वह बचत सालभर के आयकर से भी अधिक होती? क्या होगा अगर दूसरों भी यही गेम खेलें? इस तरह के अन्य कितने गेम खेले जा रहें हैं देश में हैं? और एक जखझोर देने वाला सवाल आखिर आयकर शासन का उद्देश्य क्या हैं?

DO NOT COPY